Q. "प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल रूपी मेहराब की आधार शिला है।" इस कथन की व्याख्या करे।

Ans. :- ब्रिटिश प्रधानमंत्री संसार के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली पद का अधिकारी होता है। कहा जाता है कि "पार्लियामेन्ट में निश्चित बहुमत रहते हुए इंगलैण्ड का प्रधानमंत्री वह कार्य कर सकता है जिसे जर्मनी का सम्राट और अमेरिका का राष्ट्रपति भी नहीं कर सकता, क्योंकि वह कानूनों में परिवर्तन कर सकता है करारोपण कर सकता है, उसे समाप्त कर सकता है तथा वह राज्य की समस्त शक्तियों का निर्देशन कर सकता है।" इसी कारण Lord Morley ने ब्रिटिश PM को मंत्रिमण्डल रूपी मेहराब की आधार शिला कहा है। (Prime Minister is the Key Stone of the cabinet arch.)

राज्य अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति सरकार के माध्यम से करती है। सरकार कानून बनाने, उसे लागू कराने एवं उसकी व्याख्या करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। उपरोक्त तीनों कार्य क्रमशः विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका द्वारा सम्पादित किये जाते हैं। विधायिका द्वारा निर्मित कानून को लागू करने की जिम्मेवारी कार्यपालिका पर है और कार्य मंत्रिमण्डल ब्रिटेन की वास्तविक कार्यपालिका है तथा प्रधानमंत्री कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान। Willium Harcourt ने British P.M को नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा कहकर उसकी महत्ता एवं स्थिति को स्पष्ट करने की कोशिश की।

सैद्धान्तिक दृष्टि से ब्रिटिश प्रधानमंत्री की नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती है, लेकिन व्यवहार में वह House of commons में बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल के नेता को ही प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर सकता है। हालांकि कुछ अवसर पर सम्राट को अपने विवेक का इस्तेमाल करने का मौका

Scanned with CamScanner

मिला है। जैसे 1963 में जब प्रधानमंत्री मैकमिलन ने त्यागपत्र दिया तब उसके उत्तराधिकारी के अभाव में सम्राट ने लार्ड सभा से डगलस होम को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया। इसका तीव्र विरोध हुआ। और अब ब्रिटेन मे दोनो प्रमुख राजनीतिक दलो द्वारा स्वंय अपने दलीय नेता के चुनाव की परम्परा विकसित हो गई है इस प्रकार अब सम्राट द्वारा अपने विवेक के इस्तेमाल के अवसर समाप्त कर दिये गये है। ब्रिटेन मे अब यह परम्परा विकसित हो गई है कि प्रधानमंत्री कामन्स सभा के सदस्यो मे से ही चुने जाते है लार्ड सभा से नही।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के पद के सम्बन्ध मे एक दिलचस्प बात यह है कि यह पद ब्रिटेन मे विकसित हुआ है। जब सम्राट जार्ज पंचम ने कैबिनेट की बैठको में शामिल होना बन्द कर दिया तो कैबिनेट की अध्यक्षता के लिए किसी पदाधिकारी की आवश्यकता महसुस की गई। ऐसा पदाधिकारी कैबिनेट का प्रधान ही हो सकता था और इस प्रकार ब्रिटेन में प्रधानमंत्री के पद का सृजन हुआ। मिस्टर वालपोल प्रथम प्रधानमंत्री बने थे। इनकी नियुक्ति 1721 मे की गई थी।

ब्रिटिश शासन प्रणाली में प्रधानमंत्री की स्थिति काफी महत्वपूर्ण है। जेनिंग्स ने प्रधानमंत्री को "सम्पूर्ण संविधान की आधार शिला बताया है। जबकि सर सीडनी लो ने प्रधानमंत्री की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "संसद मे निश्चित बहुमत के रहते ब्रिटिश PM वह सब कार्य कर सकता है, क्योंकि वह कानून मे बदलाव, नये कर लगा सकता है या किसी कर को समाप्त की सकता है, वह राज्य की सभी शक्तियो का निर्देशन कर सकता है।" इस प्रकार PM को व्यापक शक्ति प्राप्त है और उसे निम्न शीर्षकों मे व्यक्त किया जा सकता है। —

1. मंत्रिमण्डल का निर्माण — वैधानिक तौर पर मंत्रिमण्डल के सदस्यो की नियुक्ति प्रधानमंत्री के परामर्श से सम्राट करता है। लेकिन वास्तव में इस सम्बन्ध मे प्रधानमंत्री की इच्छा सर्वोपरि होती है।

Scanned with CamScanner

न केवल मंत्रियों का चुनाव बल्कि उनके बीच विभागों के वितरण में भी प्रधानमंत्री का निर्णय अन्तिम होता है।

2. मंत्रिमण्डल का कार्य संचालन — ब्रिटिश प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल की समस्त कार्यवाहियों का संचालन करता है। वह मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है। मंत्रिमण्डल की कार्य-विधि पर भी उसका नियंत्रण होता है। साधारणतया कोई भी मंत्री किसी प्रस्ताव को प्रस्तुत करने से पूर्व उस पर प्रधानमंत्री की सहमति अवश्य लेता है। यह स्थिति प्रधानमंत्री को मंत्रिमण्डल का पथ-प्रदर्शक बना देती है।

3. मंत्रिमण्डल का अन्त — विधि के अनुसार मंत्रियों को पद-च्युत करने का अधिकार सम्राट को है, लेकिन व्यवहार में यह परम्परा बन गई है कि इस शक्ति का प्रयोग सम्राट प्रधानमंत्री की सलाह पर ही करता है। प्रधानमंत्री से असहमत मंत्री को अन्तिम रूप से त्यागपत्र देना ही पड़ता है। प्रधानमंत्री की मंत्रिमण्डल में प्राप्त इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए लास्की ने सच ही कहा है "प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल का केन्द्रबिन्दु है, वह इसके निर्माण, उसके जीवन और अन्त में, केन्द्रीय स्थिति रखता है।

4. शासन पर नियंत्रण — सैद्धान्तिक दृष्टि से शासन का प्रमुख सम्राट होता है, लेकिन व्यवहार में इस शक्ति का प्रयोग प्रधानमंत्री ही करता है। शासन पर नियंत्रण रखने के लिए प्रधानमंत्री विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित करता है, विभिन्न विभागों के मंत्रियों में अध्यक्षता करता है और विभिन्न विभागों को निर्देश देता है।

5. राजकीय सम्मान प्रदान करने का कार्य भी प्रधानमंत्री के निर्देश पर सम्राट

द्वारा किया जाता है। सभी महत्वपूर्ण राजकीय पद, जैसे- राजदूत, न्यायधीश, विभागों के प्रमुख व उपनिवेशों के गवर्नर आदि की नियुक्ति में भी प्रधानमंत्री का निर्णय अंतिम होता है।

5. पर राष्ट्र सम्बन्धों का संचालन — विदेश मंत्रालय प्रधानमंत्री के पास हो या नहो पर विदेश नीति के सूचारु संचालन का दायित्व प्रधानमंत्री पर ही होता है। दूसरे देशों के साथ किये जाने वाले समझौतों, सम्बन्धों पर ब्रिटेन की ओर से विदेश मंत्री का नहीं बल्कि प्रधानमंत्री द्वारा ही हस्ताक्षर किये जाते हैं।

6. लोकसदन का नेतृत्व — House of commons में बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल के नेता को प्रधानमंत्री का पद प्राप्त होता है। इसलिए वह दलीय नेता के साथ ही साथ सदन के नेता के रूप में भी कार्य करता है। वह व्यवस्थापन का संचालन करता है तथा इस सम्बन्ध में नीति निर्धारण कर संसद का पथ प्रदर्शन करता है। समस्त सरकारी विधेयक उसके निरीक्षण में तथा उसके परामर्श के अनुसार ही तैयार किये जाते हैं। वार्षिक आय-व्यय तैयार करने में प्रधानमंत्री की भूमिका अहम होती है। बजट सहित व्यवस्थापन का समस्त कार्य उसकी इच्छानुसार ही सम्पन्न होता है। और इसी कारण ब्रिटिश P.M की स्थिति अमेरिकी राष्ट्रपति से भिन्न और उच्च हो जाती है।

7. मंत्रिमण्डल और सम्राट के बीच की कड़ी — वह सम्राट का मुख्य परामर्शदाता होता है तथा मंत्रिमण्डल के निर्णयों की सूचना सम्राट को देता है। साथ ही सम्राट द्वारा दिये गये निर्देशों को भी मंत्रिमण्डल को पहुँचाता है।

8. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व — राजनीतिक आर्थिक तथा अन्य महत्वपूर्ण सम्मेलनों में प्रधानमंत्री ही ब्रिटेन की ओर से भाग लेते हैं। सन 1929 में मैकडोनाल्ड ने अमेरिकी राष्ट्रपति हूवर के साथ बार-बार वार्तालाप करके इंगलैण्ड और अमरीका के बिच सम्बन्ध स्थापित करने में प्रसंशनीय योगदान दिया था। साथ ही वह राष्ट्र-मण्डलीय देशों से सम्पर्क स्थापित करता है और महत्वपूर्ण मामलों में उन्हें परामर्श भी देता है।

9. राष्ट्र का नायक — वर्तमान में कोई भी राजनीतिक दल अपनी नीतियों के आधार पर नहीं बल्कि अपने नेता के

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व के आधार पर चुनाव लड़ती है। 1945 का चुनाव अनुदार दल द्वारा चर्चिल के नाम पर ही लड़ा गया था। दल का प्रमुख नारा था "उसको युद्ध का अधूरा काम पूरा करने दो।" 1992 के आम चुनाव में ब्रिटिश जनता को यह निर्णय करना था कि वह प्रधानमंत्री के पद पर जॉन मेजर अथवा नील किनॉक में से किसे चुनना चाहती है।

उपरोक्त तथ्यों के विवेचन से प्रधानमंत्री की महत्वपूर्ण स्थिति स्पष्ट हो जाती है। वह न केवल शासन का प्रमुख होता है बल्कि वह देश का भी प्रमुख व्यक्ति है। उसे लोकसदन के नेता की भी स्थिति प्राप्त है और मंत्रिमण्डल में भी उसकी स्थिति समकक्षों में समान नहीं बल्कि मंत्रिमण्डल का अधिपति कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। डा० जेनिंग्स ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री की स्थिति को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है — "प्रधानमंत्री न केवल सामान्य श्रेणी वालों में प्रथम ही नहीं है और न केवल हारकोर्ट के शब्दों में 'सितारों के बीच चन्द्रमा' ही है बल्कि वह उस सूर्य के सदृश है जिसके चारों ओर अन्य नक्षत्र घूमते रहते हैं।

———o———